भारतीय दर्शन

की रूपरेखा

प्रो० हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा

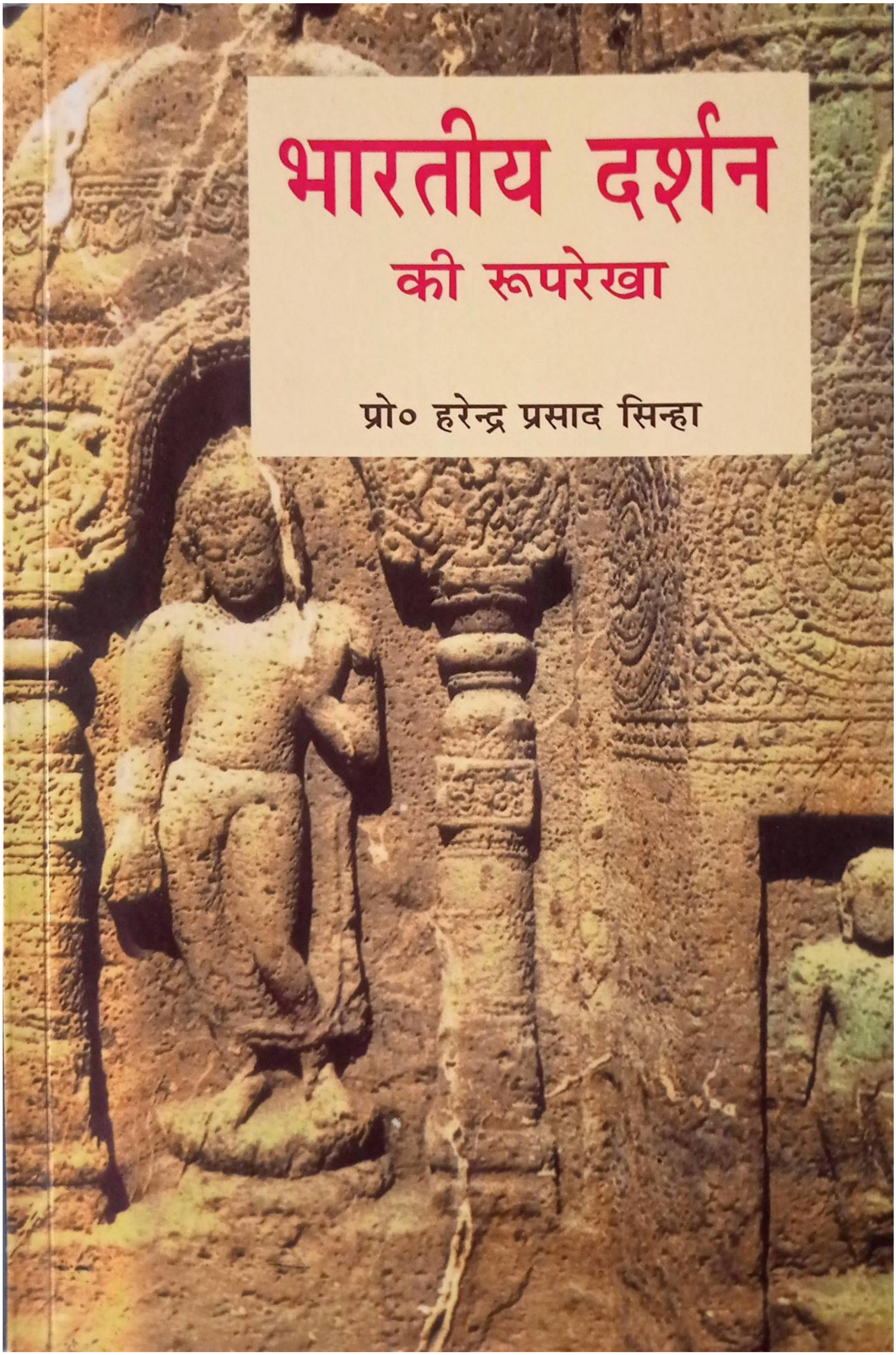

Scanned by TapScanner

विषय-सूची

	पृष्ठ संख्या
पहला अध्याय : विषय-प्रवेश	१-९
दर्शन क्या है?	१
भारतीय दर्शन और पश्चिमी दर्शन के स्वरूप की तुलनात्मक व्याख्या	२
भारतीय दर्शन का मुख्य विभाजन	४
भारतीय दर्शन के सम्प्रदाय	६
भारतीय दर्शन का विकास	८
दूसरा अध्याय : भारतीय दर्शनों की सामान्य विशेषताएं	१०-२५
तीसरा अध्याय : भारतीय दर्शन में ईश्वर-विचार	२६-३१
चौथा अध्याय : वेदों का दर्शन	३२-५३
विषय-प्रवेश	३२
वेद के अध्ययन की आवश्यकता	३३
दार्शनिक प्रवृत्तियाँ	३३
जगत् विचार	३४
नीति और धर्म	३४
वैदिक बहुदेववाद	३५
(क) वरुण	३७
(ख) मित्र	३८
(ग) सूर्य	३९
(घ) सविता	३९
(ङ) उषा	४०
(च) अश्विन	४१
(छ) पूषन्	४२
(ज) चन्द्रमा	४२
(झ) अदिति	४२
(ञ) विष्णु	४३
(ट) इन्द्र	४४
(ठ) रुद्र	४५
(ड) मरुत्	

Scanned by TapScanner

(ड) वायु और वात ४५
(ण) आपः ४५
(त) पर्जन्य ४५
(थ) मातरिश्वन् ४५
(द) यम ४६
(ध) सोम ४६
(न) पृथिवी ४७
(प) सरस्वती ४७
(फ) बृहस्पति ४७
(ब) अग्नि ४७
वैदिक देवताओं का वर्गीकरण ४८
वैदिक एकेश्वरवाद ४९
वैदिक एकवाद अथवा अद्वैतवाद ५२

पाँचवाँ अध्याय : उपनिषदों का दर्शन ५४-६५
विषय-प्रवेश ५४
उपनिषद् और वेदों की विचारधारा में अन्तर ५४
उपनिषदों का महत्त्व ५५
ब्रह्म-विचार ५६
जीव और आत्मा ५८
आत्मा और ब्रह्म ६०
जगत्-विचार ६२
माया और अविद्या ६३
बन्धन और मोक्ष ६४

छठा अध्याय : गीता का दर्शन ६६-७८
विषय-प्रवेश ६६
गीता का महत्त्व ६६
गीता में योग ६७
ज्ञान-योग या ज्ञान मार्ग ६८
भक्ति-मार्ग (भक्ति-योग) ६८
कर्म-योग ६९
ईश्वर-विचार ७१
गीता में जीवात्मा की धारणा ७३
स्वधर्म की अवधारणा ७५
स्वधर्म की महत्ता ७६
७७

Scanned by TapScanner

सातवाँ अध्याय : चार्वाक दर्शन ७९-१०३

विषय-प्रवेश ७९
चार्वाक का प्रमाण-विज्ञान ८१
(क) अनुमान अप्रमाणिक है ८२
(ख) शब्द भी अप्रमाणिक है ८४
चार्वाक का तत्त्व-विज्ञान ८५
(क) चार्वाक के विश्व-सम्बन्धी विचार ८६
(ख) चार्वाक के आत्मा-सम्बन्धी विचार ८७
(ग) चार्वाक के ईश्वर-सम्बन्धी विचार ९०
चार्वाक का नीति-विज्ञान ९२
चार्वाक दर्शन की समीक्षा ९५
चार्वाक का योगदान १०१

आठवाँ अध्याय : बौद्ध-दर्शन १०४-१४२

विषय-प्रवेश १०४
बुद्ध की तत्त्व-शास्त्र के प्रति विरोधात्मक प्रवृत्ति १०५
चार आर्य-सत्य १०७
प्रथम आर्च-सत्य (दु:ख) १०९
द्वितीय आर्य-सत्य (दु:ख समुदाय) ११०
तृतीय आर्य-सत्य (दु:ख-निरोध) ११४
चतुर्थ आर्य-सत्य (दु:ख-निरोध-मार्ग) ११७
क्षणिकवाद १२१
अनात्मवाद १२२
अनीश्वरवाद १२४
बौद्ध-दर्शन के सम्प्रदाय १२५
(क) माध्यमिक-शून्यवाद १२६
(ख) योगाचार-विज्ञानवाद १२९
(ग) सौत्रान्तिक-बाह्यानुमेयवाद १३२
(घ) वैभाषिक बाह्य-प्रत्यक्षवाद १३४
बौद्ध मत के धार्मिक सम्प्रदाय १३६
(क) हीनयान १३६
(ख) महायान १३८
हीनयान और महायान में अन्तर १४१

नवाँ अध्याय : जैन दर्शन १४३-१६५

विषय-प्रवेश १४३

Scanned by TapScanner

जैन मत का प्रमाण-शास्त्र १४४
(क) अनेकान्तवाद १४६
(ख) अनेकान्तवाद और स्याद्वाद के बीच सम्बन्ध १४८
स्याद्वाद १४८
जैन के द्रव्य-सम्बन्धी विचार १५२
(क) धर्म और अधर्म १५३
(ख) पुद्गल १५३
(ग) आकाश १५४
(घ) काल १५४
जैन का जीव-विचार १५४
जीव के अस्तित्व के लिए प्रमाण १५७
बन्धन और मोक्ष का विचार १५७
जैन-दर्शन के सात तत्त्व १६२
जैन का अनीश्वरवाद १६२
जैन-दर्शन का मूल्यांकन १६५

दसवाँ अध्याय : न्याय-दर्शन १६६-२०२

विषय-प्रवेश १६६
न्याय का प्रमाणशास्त्र १६७
(क) ज्ञान का स्वरूप १६७
(ख) 'प्रमा' और 'अप्रमा' का स्वरूप १६८
(ग) प्रमा के प्रकार १६९
(घ) प्रमा के अंग १६९
प्रत्यक्ष १७०
(क) प्रत्यक्ष का स्वरूप एवं परिभाषा १७०
(ख) प्रत्यक्ष का वर्गीकरण १७३
लौकिक प्रत्यक्ष १७४
प्रत्यभिज्ञा १७५
अलौकिक प्रत्यक्ष १७६
सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष १७६
ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष १७६
योगज १७७
अनुमान १७८
अनुमान के पंचावयव १७९
अनुमान का आधार १८१
न्यायनुसार व्याप्ति की विधियाँ १८२

Scanned by TapScanner

अनुमान के प्रकार
अनुमान के दोष १८३
शब्द १८५
वाक्य-विवेचन १८७
उपमान १८८
भ्रम-विचार १८९
न्याय का कार्य-कारण सम्बन्धी विचार १८९
न्याय का ईश्वर-विचार १९०
ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाण १९२
(१) कारणाश्रित तर्क १९४
(२) नैतिक तर्क १९४
(३) वेदों के प्रामाण्य पर आधारित तर्क १९४
(४) श्रुतियों की आप्तता पर आधारित तर्क १९५
न्याय के ईश्वर-सम्बन्धी विचारों के विरूद्ध आपत्तियाँ १९६
न्याय के आत्मा, बन्धन एवं मोक्ष सम्बन्धी विचार १९७
आत्मा के अस्तित्व के प्रमाण १९८
बन्धन एवं मोक्ष-विचार १९९
न्याय दर्शन का मूल्यांकन २००
ग्यारहवाँ अध्याय : वैशेषिक दर्शन २०२
विषय-प्रवेश २०३-२२७
द्रव्य २०३
दिक् और काल २०६
मन २०७
आत्मा २०८
गुण २०८
कर्म २१०
सामान्य २१२
विशेष २१४
समवाय २१६
अभाव २१७
सृष्टि और प्रलय का सिद्धान्त २२०
वैशेषिक का परमाणुवाद के विरुद्ध आपत्तियाँ २२३
वैशेषिक-पदार्थों की आलोचनाएँ २२४
बारहवाँ अध्याय : सांख्य दर्शन २२५
विषय-प्रवेश २२८-२६९
२२८

Scanned by TapScanner

कार्य-कारण का सिद्धान्त २२९
सत्यकार्यवाद के रुप २३२
सत्यकार्यवाद के विरुद्ध आपत्तियां २३४
सत्यकार्यवाद की महत्ता २३५
प्रकृति और उसके गुण २३६
पुरुष २४२
पुरुष के अस्तित्व के प्रमाण २४४
विकासवाद का सिद्धान्त २४६
विकासवाद के विरुद्ध आपत्तियाँ २५३
प्रकृति और पुरुष का सम्बन्ध २५५
बन्धन और मोक्ष २५७
सांख्य की ईश्वर-विषयक समस्या २६०
प्रमाण-विचार २६३
सांख्य-दर्शन की समीक्षा २६५
प्रकृति के विरुद्ध आपत्तियाँ २६७

तेरहवाँ अध्याय : योग दर्शन २७०-२७८

विषय-प्रवेश २७०
चित्त-भूमियाँ २७१
योग के अष्टाङ्ग साधन २७२
समाधि के भेद २७५
यौगिक शक्तियाँ २७५
ईश्वर का स्वरुप २७६
ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाण २७७
उपसंहार २७७

चौदहवाँ अध्याय : मीमांसा दर्शन २७९-२९३

विषय-प्रवेश २७९
प्रमाण-विचार २७९
उपमान २८०
शब्द २८१
अर्थापत्ति २८२
अर्थापत्ति की उपयोगिता २८३
अनुपलब्धि २८४
प्रामाण्य-विचार २८५
भ्रम-विचार २८६
तत्त्व-विचार २८७

Scanned by TapScanner

भारतीय दर्शन का विकास २८७
आत्म-विचार २८७
ईश्वर का स्थान २८८
धर्म-विचार (कर्म-फल सिद्धान्त) २८९
मोक्ष-विचार २९२
मीमांसा-दर्शन की आलोचना २९२

पन्द्रहवाँ अध्याय : शंकर का अद्वैत-वेदान्त २९४-३२१

विषय-प्रवेश २९४
शंकर का जगत्-विचार २९६
क्या विश्व पूर्णत: असत्य है? २९८
माया और अविद्या सम्बन्धी विचार ३००
माया की विशेषताएं ३०२
ब्रह्मविचार ३०३
ब्रह्म के अस्तित्व के प्रमाण ३०५
ईश्वर-विचार ३०५
आत्म-विचार ३०७
जीव-विचार ३११
ब्रह्म और जीव का सम्बन्ध ३११
शंकर का बन्धन और मोक्ष-विचार ३१३
विवर्तवाद ३१५
भ्रम-विचार ३१७
सृष्टि-विचार ३१८
शंकर के दर्शन में नैतिकता तथा धर्म का स्थान ३१९
शंकर का दर्शन अद्वैतवाद क्यों कहा जाता है? ३२०

सौलहवाँ : रामानुज का विशिष्टाद्वैत दर्शन ३२२-३३३

विषय-प्रवेश ३२२
ब्रह्म-विचार अथवा ईश्वर-विचार ३२२
ईश्वर के अस्तित्व सम्बन्धी प्रमाणों की असफलता ३२४
शंकर के ब्रह्म और रामानुज के ब्रह्म की तुलनात्मक व्याख्या ३२४
जीवात्मा ३२६
अचित् तत्त्व ३२७
शंकर के मायावाद की आलोचना ३२७
जगत्-विचार ३२९
भ्रम-विचार ३३०
मोक्ष-विचार ३३०

Scanned by TapScanner

भक्ति का स्वरूप ३३२
भक्ति के प्रकार ३३२
अभ्यास के लिए प्रश्न ३३५-३५२
सहायक ग्रंथों की सूची ३५३-३५५

Scanned by TapScanner